PHILOSOPHY

PG III Sem (Indian Logic)

Dr. S. K. Singh
Mob.- 943144995[?]

व्याप्ति और पक्षता
(अनुमान का आधार)

→ अनुमान के दो पक्ष है - तार्किक और मनो मनोवैज्ञानिक। तदनुरूप अनुमान के दो आधार भी है - व्याप्ति और पक्षता। व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार है और पक्षता मनोवैज्ञानिक।

→ हेतु और साध्य के नियत पारस्परिक संबंध ज्ञान को 'व्याप्ति' कहते हैं। पक्ष और हेतु के सामंजस्य को पक्षधर्मता कहते हैं। यथा -

जहाँ जहाँ धुँआ है वहाँ वहाँ आग है।
पर्वत पर धुँआ है।
∴ पर्वत पर आग है।

इस अनुमान में धुँआ (हेतु अथवा लिंग) तथा अग्नि (साध्य अथवा लिंगि) के संबंध 'जहाँ जहाँ धुँआ है वहाँ वहाँ आग है', को व्याप्ति कहेंगे। तथा पर्वत (पक्ष) तथा धुँआ (लिंग) के सामंजस्य, यथा - 'पर्वत पर धुँआ है' को पक्षधर्मता ज्ञान कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

→ इस प्रकार अनुमान के दो आधार हैं — तार्किक और मनोवैज्ञानिक। व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार है और पक्षता या पक्षधर्मता अनुमान को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

→ अनुमान के आधारों की चर्चा करते हुये डॉ॰ सतीश चन्द्र चटर्जी ने कहा है - 'अनुमान की वैधता व्याप्ति पर तथा अनुमान की संभाव्यता पक्षता पर आश्रित है।

→ अनुमान तभी निष्पन्न हो सकता है जब पक्ष तथा अनुमिति का विषय विद्यमान हो तथा यह तभी प्रामाणिक सिद्ध हो सकता है जब यह व्याप्ति अथवा हेतु (मध्य पद) तथा साध्य (वृहद् पद) के सार्वकालिक तथा सार्वदेशिक संबंध पर आश्रित हो। इस प्रकार व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार तथा पक्षता अनुमान का मनोवैज्ञानिक आधार है।

→ किसी भी अनुमान में व्याप्ति तथा पक्षधर्मता दोनों के ही ज्ञान से अनुमिति संभव होती है। अतः अनुमान प्रमाण के सम्यक विवेचन के लिये व्याप्ति तथा पक्षधर्मता दोनों का समझना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner